एस0 एफ0 नॉडेल
(S. F. Nadel)

संरचना का सिद्धान्त (Structural Theory of Nadel)

S.F. Nadel Radcliffe Brown के निकट सहयोगी थे। इन्होंने सामाजिक संरचना का सिद्धान्त अपनी पुस्तक Theory of Social Structure (1957) में प्रस्तुत किया। नाडेल ने समाज की आवधारणा को दो दृष्टिकोणो से देखा है। 1. क्रिया जिसके अन्तर्गत नातेदारी तथा अर्थव्यवस्था, 2. समूह जिसमें परिवार एवं गोत्र सम्मलित है इनके अनुसार कुछ ऐसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक तथ्य है जो सामाजिक एवं सांस्कृतिक योजना से बाहर दिखाई देते है ये स्वतन्त्र रूप में क्रिया करते रहते है इस क्रिया को स्वतन्त्र क्रिया कहते है।

नाडेल ने अपने सिद्धान्त में संरचना प्रकार्य एवं विषय वस्तु में पाये जाने वाले अन्तर को स्पष्ट किया है उनके अनुसार संरचना एवं प्रकार्य दो भिन्न–भिन्न विचार धाराऐं है जबकि विषय वस्तु संरचना से सम्बन्धित है। संरचना तथा विषयवस्तु किसी भी

Scanned with CamScanner

समाज का गुणात्मक पहलू होता है, और विषयवस्तु को एक सामाजिक पहलू के रूप में स्वीकार किया जाता है। जबकि संरचना अगों का एक व्यवस्थित ढ़ंग होता है संरचना परिवर्तनशील है अतः इसमें परिवर्तन हो सकता है संरचना की अपेक्षा सामाजिक तत्त्वो में अधिक परिवर्तन देखा गया है अतः

1. संरचना कई अगों का एक व्यवस्थित ढ़ाँचा है जोकि अन्तः सम्बन्धित तथा अन्तःनिर्मित है।
2. पूरी संरचना का रूपान्तरण होता है लेकिन सापेक्षिक दृष्टिकोण से कम होता है।
3. सामाजिक सम्बन्धो जिनको सामाजिक संरचना में सामाजिक अंगों के समान माना जाता है इनमें परिवर्तन उत्पन्न होने पर समाज के अंग भी परिवर्तित होते रहते हैं।

नियम एवं सामाजिक सम्बन्ध (Rules & Social Relation)

समाज जो कि व्यक्तियों के समूह द्वारा निर्मित होता है व्यक्ति आपस में जो क्रियाऐ करते है वह समाज के नियमो द्वारा संचालित होती है, समाज के अन्दर दो व्यक्तियों के बीच जो अन्तः क्रियाऐं होती हैं वह अन्तः क्रियाएं नियमों द्वारा संचालित होती हैं। समाज में नियम ही व्यक्ति को निश्चित उपायो से क्रिया करने की दिशा प्रदान करते हैं और उनसे जो सम्बन्ध स्थापित होते है वह सामाजिक सम्बन्ध कहलाते है समाज में जो सम्बन्ध नियमों द्वारा संचलित होते है उन्हे संस्थागत सम्बन्ध कहा जाता है इसके विपरीत निजी सम्बन्ध नियमो द्वारा संचालित नही होते अतः यह संस्थागत सम्बन्ध नही कहलाते हैं।

नॉडेल के अनुसार जब दो व्यक्तियों के मध्य निरन्तर अन्तः क्रियाऐ होती है तब हम उसे सामाजिक सम्बन्ध कहते है और इन अन्तः क्रियाओ में नियमितता और स्थायित्व होती है लेकिन

वास्तविक व्यवहार और क्रियाऐ कभी भी स्थायी एवं स्थिर नही होती हमेशा अस्थायी होती है और व्यवहार, स्थिति एवं उद्देश्य के अनुसार बदलती रहती है। तब यह कहा जाता है कि किसी भी सामाजिक सम्बन्ध में दो व्यक्तियो में एक दूसरे के प्रति समान व्यवहार होते है तो उसे समानता माना जाता है। और इस समानता को व्यापक रूप में समझना चाहिए।

उदाहरण के रूप में मित्रता जिसकी दो व्यक्तियो में तीन विशेषताएँ पाई जाती हैं– 1. आर्थिक सहायता, 2. पारस्परिक भावनात्मक प्रतिक्रिया, 3. आपसी उपदेश। (सलाह)

लेकिन यह तीनो विशेषताऐ दो व्यक्तियो की अन्तः क्रियाओ में हमेशा नही पाई जाती है केवल व्यापक रूप में दिखाई देती है। इसी प्रकार पिता पुत्र सम्बन्धो में पुत्र द्वारा पिता के आदेश का पालन पिता द्वारा पुत्र का समाजीकरण एक सहव्यवहार शिक्षा है, लेकिन इनमें भी मतभेद एवं संर्घष पाया जाता है। Nadel ने सामाजिक सम्बन्ध के व्यवहार को निम्न सामाजीकरण के माध्यम से समझाया है।

A r to B	(i) (A का B के साथ सामाजिक सम्बन्ध है)
A (a ----- n) : B r & Vice Versa	(ii) (अगर A अपने सारे व्यवहार के साथ B की और क्रिया करे और B भी अपने सारे व्यवहार में साथ A की ओर क्रिया करें)
∴ r > E a ------- n	(iii) (इसीलिये सामाजिक सम्बन्ध का अर्थ है सारे व्यवहारो का मिश्रण)
r ------	(सामाजिक सम्बन्ध)
A & B --------	(दो कर्त्ता है।)
(a ------ n)	(विभान्न प्रकार के व्यवहारो का एक दूसरे की और क्रियाऐ करना।)

Scanned with CamScanner

संरचना का विश्लेषण (Analysis of Structure):

नाडेल से पूर्व कुछ मानवशास्त्रियों ने संरचना को व्यक्तियो के सम्बन्धो पर आधारित माना था जिसका तात्पर्य रेडक्लिफ् ब्राउन से है। ईवान्सप्रीचाइल्ड ने समूह के सामाजिक सम्बन्धो पर आधारित माना है लेकिन Nadel ने संरचना का विश्लेषण दो स्तरो पर किया है– 1. व्यक्तियो के बीच सम्बन्ध, 2. समूहो के बीच सम्बन्ध।

यह समबन्धो के सम्बन्ध है इनमें पहला स्तर सरल है तथा दूसरा स्तर जटिल एवं गुणात्मक है दूसरे स्तर को समझने के लिये उन्होंने दो प्रत्ययो का प्रयोग किया है– 1. प्रारूप, 2. जाल।

प्रारूप (Model): Pattern

जिसका तात्पर्य यह है कि सम्बन्धो का वितरण समाज में समूहो के अन्दर एवं समूहो के बाहर सामाजिक समूह, परिवार, वंशो आदि में पाएँ जाते है उनकी पुर्नावृति हर समूह में होती है इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक समूह के अन्दर जो सम्बन्ध पाएं जाते है उनमें समानता होती है जबकि दो समूहो के बीच में सीमा पर पाएँ जाने वाले सम्बन्धो में भी पुर्नावृति पायी जाएगी जिसको निम्न समीकरण द्वारा स्पष्ट किया गया है।

I	II	III
r r r Br	r r r Br	r r r Br
r r r Br	r r r Br	r r r Br
r r r Br	r r r Br	r r r Br

r = सामाजिक सम्बन्ध (Relations)

Br = दो समूहो के मध्य सीमा पर पाऐ जाने वाले सम्बन्ध। (Boundry Relations)

उपरोक्त सभी सम्बन्धों का जाल सामाजिक संरचना कहलाती है उपरोक्त में तीन समूहो में सम्बन्ध की समानता को दर्शाया गया है तथा Br का सम्बन्ध दो समूहो के बीच सीमा पर पाये जाने वाले सम्बन्ध से है। नॉडेल के अनुसार इस प्रकार सम्बन्ध का वितरण होता है यह एक गुणात्मक पहलू है और संरचना का अन्तिम रूप है।

जाल (Web) Network

नॉडेल के अनुसार विभिन्न प्रकार के सम्बन्धो के बीच में जो व्यवस्थित ढाँचा उत्पन्न होता है उसे जाल कहते है यह इण्टरलॉकिंग सम्बन्ध है। नॉडेल के अनुसार हर समाज में इस प्रकार के जाल का एक निश्चित रूप होता है जो इण्टरलॉकिंग से बंधा रहता है जब संरचना में परिवर्तन उत्पन्न होता है तब इण्टरलॉकिंग का रूप बदल जाता है। इस प्रकार नॉडेल ने व्यक्ति की भूमिकाओ पर आधारित अन्तक्रियाओं से उत्पन्न सामाजिक सम्बन्धो के बारे में सामाजिक संरचना का एक अच्छा उदाहरण दिया है।

आलोचना

जाल का निश्चित रूप हमेशा नही होता है। यह सरल परम्परात्मक समाज में होता है आधुनिक समाज जाल मुक्त होते है।

———

Scanned with CamScanner